ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट की इण्डियन लेंग्वेजेज की पत्रिकाओं में क्र.सं. 62 पर सम्मिलित

वर्ष-14 अंक : 4 (पूर्णांक - 56) दिसम्बर 2020-फरवरी 2021

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की त्रैमासिक शोधपत्रिका

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के प्रकाशन

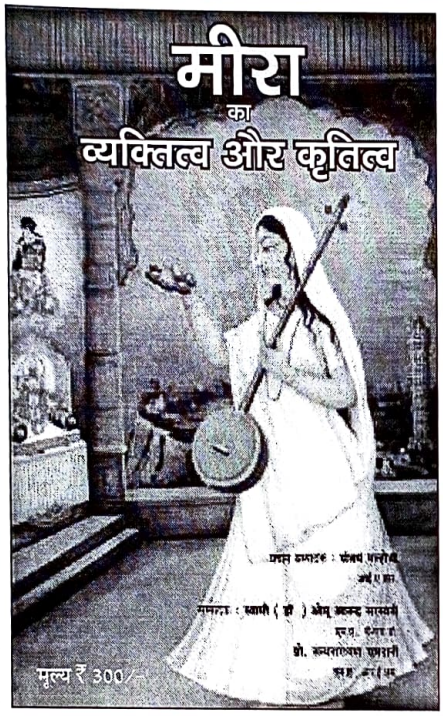

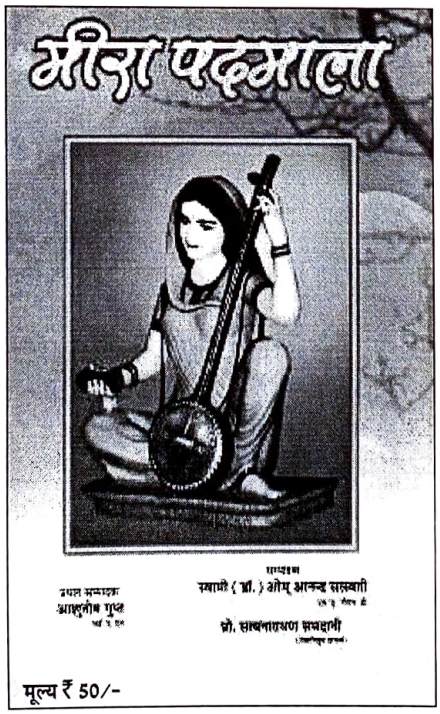

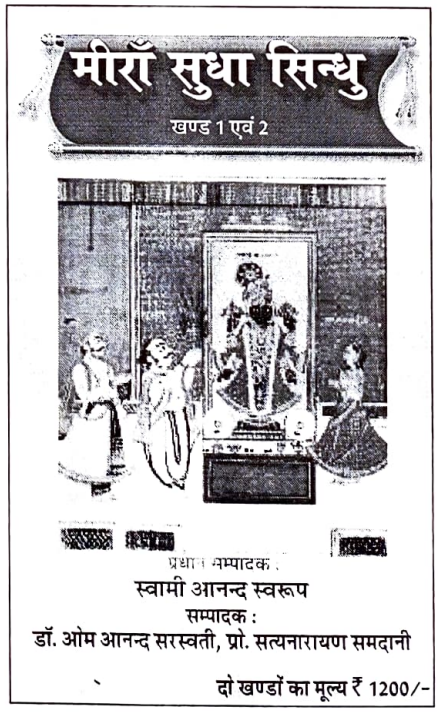

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - RAJHIN/2007/19628
ISSN 2455-6033

मीरायन

(साहित्यिक-सांस्कृतिक त्रैमासिक शोध-पत्रिका)

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका (इण्डियन लेंग्वेजेज, क्र.सं. 62)

वर्ष-14, अंक-04 (पूर्णांक-56) दिसम्बर, 2020-फरवरी, 2021

सहयोग राशि

वार्षिक
व्यक्तिगत : 300.00 रुपया
संस्थागत : 400.00 रुपया
आजीवन (दस वर्षीय)
व्यक्तिगत : 3000.00 रुपया
संस्थागत : 4000.00 रुपया
सहयोग राशि मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ के पक्ष में नकद/ऑन लाइन/चैक/ बैंक ड्राफ्ट द्वारा भिजवाई जा सकती है।

कार्यालय एवं सम्पर्क-सूत्र
मीरा स्मृति संस्थान
मकान नं. 25, फ्रेण्ड्स कॉलोनी,
पार्वती गार्डन के पीछे,
सेंती, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)
मो. 094141–48537
मो. 095155–79037
ई-मेल :
samdanisatya@gmail.com

प्रकाशन-तिथि
23 फरवरी, 2021

संस्थापक सम्पादक
कीर्तिशेष स्वामी (डॉ.) ओम् आनन्द सरस्वती

सम्पादक
सत्यनारायण समदानी

मीरायन के बैंक खाता का विवरण

1. खाता का नाम	मीरा स्मृति संस्थान (MEERA SMRITI SANSTHAN)
2. खाता संख्या	बचत खाता 51042428405
3. बैंक शाखा	भारतीय स्टेट बैंक, कलक्टरेट शाखा चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
4. IFSC	SBIN0031237

Designed by: उमेश अजमेरा,श्रीजी डॉट कॉम,चित्तौड़गढ़-9829079159

समस्त सम्पादकीय सहयोग अवैतनिक एवं मानद है। रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी विवाद चित्तौड़गढ़ न्यायाधिकरण क्षेत्र के अधीन होंगे।

मीरा स्मृति संस्थान के पूर्व अध्यक्ष

- डॉ. (श्रीमती) मालोविका पवार, आई.ए.एस. (रिटायर्ड)
- डॉ. प्रमोद कुमार आनन्द, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- श्री शैलेन्द्र कुमार अग्रवाल, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- श्री संजय मल्होत्रा, आई.ए.एस.
- श्री सी.पी. व्यास, आई.ए.एस. (रिटायर्ड)
- श्री मनोज शर्मा, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- श्री रामरख, आई.ए.एस. (रिटायर्ड)
- श्री आर.एन.अरविन्द, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- डॉ. आर.एस.गठाला, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- श्री आशुतोष गुप्त, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- डॉ. पी.एल. अग्रवाल, आई.ए.एस.(रिटायर्ड)
- डॉ. समित शर्मा, आई.ए.एस.
- डॉ. (श्रीमती) आरुषी ए.मलिक, आई.ए.एस.
- स्व. श्री सत्यनारायण काबरा
- श्री भंवरलाल शिशोदिया

मीरायन पत्रिका के विद्वान परामर्शद्

- ❖ प्रो. (डॉ.) सदानन्दप्रसाद गुप्त, लखनऊ
  कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान
- ❖ प्रो. एस.आर. भट्ट, दिल्ली
  पूर्व चेयरमेन, भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद
- ❖ प्रो. जी. गोपीनाथन्, कालीकट
  पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
- ❖ प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा, जयपुर
  पूर्व कुलपति, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा
- ❖ प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, उज्जैन
  आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय
- ❖ श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल, जयपुर
  सन्त-साहित्य विशेषज्ञ

अनुक्रम

क्र.सं.	आलेख/रचना	पृष्ठ
1.	**मीरा-पद**	05
	1. **सन्त मीराबाई**	
	(1) गिरधर म्हारो प्यारो ..... (2) माई म्हाँ गोविन्द गुण गास्यां....	
2.	**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2. **प्रो. भगवानदास जैन**, अहमदाबाद (गुजरात)	
	प्रेम-पारावर है मीरा	
3.	**सम्पादकीय**	07-09
	3. **प्रो. सत्यनारायण समदानी**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	
	हस्तलिखित ग्रन्थ सम्पदा का उद्धार : एक राष्ट्रीय आवश्यकता	
4.	**मीरा-सन्दर्भपक्ष**	
	4. **श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल**, जयपुर (राजस्थान)	
	मीरां का प्राचीनतम पद : एक टिप्पणी	10-13
	5. **प्रो. विनान्त एम. कलेवर्ट**, लुवेण (बेल्जियम)	
	The 'Earliest' Pad of Meera	14-25
	6. **श्री भंवरलाल प्रजापत**, उदयपुर (राजस्थान)	
	मीरां के हरजसों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक लोकदृष्टि	26-31
	7. **डॉ. महेश एस.**, कन्नूर (केरल)	
	अक्का महादेवी और मीराबाई की	32-37
	प्रतिरोधी चेतना : एक विश्लेषण	
	8. **सुश्री नवमी एम.**, कासरगोड (केरल)	
	स्त्री विमर्श के संदर्भ में मीरा	38-41
5.	**सन्त-भक्त/भक्ति पक्ष**	
	9. **डॉ. सुनील कुमार**, अमृतसर (पंजाब)	
	सन्त गरीबदास का सामाजिक चिन्तन	42-47
	10. **सुश्री तजिन्दर कौर एवं डॉ. सुनील कुमार**, अमृतसर (पंजाब)	
	श्री गुरुनानकदेवजी के आध्यात्मिक सिद्धांत	48-51
6.	**इतिहास पक्ष**	
	11. **डॉ. कुलराज व्यास**, सरदारशहर (राजस्थान)	
	महाराजा सूरजमल के व्यक्तित्व का ऐतिहासिक अध्ययन	52-57

12. **डॉ. लोकेन्द्रसिंह चूण्डावत**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
भोम अनुदान : प्रकृति एवं विशिष्टताएँ 58-59

7. **कला-संस्कृति पक्ष**

13. **श्री ललित शर्मा**, झालावाड़ (राजस्थान)
झालरापाटन के प्राचीन मन्दिरों का अद्‌भुत शिल्प वैभव 60-67

14. **डॉ. मुक्ति पाराशर**, कोटा (राजस्थान)
झाला हवेली कोटा के लुप्त भित्तिचित्रों का इतिहास एवं स्वरूप 68-70

15. **श्री शिवकुमार व्यास**, जोधपुर (राजस्थान)
पुष्टिमार्गी सेवा प्रणालिका में उत्सव 71-74

16. **डॉ. मुकेश हर्ष**, बीकानेर (राजस्थान)
बीकानेर और जलसंस्कृति : एक अध्ययन कुओं के संदर्भ में 75-79

8. **दर्शन-मिथक पक्ष**

17. **श्री शशिकान्त भारद्वाज**, बांसवाड़ा (राजस्थान)
साहित्यिक उपादान के रूप में मिथक : 'संशय की एक रात' के विशेष संदर्भ में 80-83

18. **डॉ. सत्यप्रकाश तिवारी**, सरदारशहर (राजस्थान)
दुःख एवं शान्ति के सम्बन्ध में जिद्दू कृष्णमूर्ति के विचारों का अध्ययन 84-87

9. **समकालीन साहित्य पक्ष**

19. **श्री नरेन्द्र कुमार ओझा**, सिरोही (राजस्थान)
राजस्थान के समकालीन हिन्दी नाटकों में नारी-चित्रण 88-89

20. **डॉ. नीतू परिहार**, उदयपुर (राजस्थान)
स्त्री-जीवन के विविध रंग : समकालीन कविता के दर्पण में 90-95

21. **डॉ. विष्णुदत्त जोशी**, बीकानेर (राजस्थान)
इक्कीसवीं सदी : स्त्री-विमर्श और हिन्दी उपन्यास 96-101

22. **डॉ. पठान रहीम खान**, हैदराबाद (तेलंगाना)
यशपाल की कहानियों में चित्रित वर्गगत संघर्ष 102-105

23. **डॉ. शिवजी चौहान**, होजाई (असम)
शिवदान सिंह चौहान की दृष्टि में आलोचना के मान 106-107

10. **पाठकदीर्घा** 108-112

स्त्री जीवन के विविध रंग : समकालीन कविता के दर्पण में

- डॉ. नीतू परिहार

समकालीन हिंदी कविता अपनी पूर्ववर्ती कविता से वैविध्य और वैचित्र्य रखती है। यह कविता सामान्य व्यक्ति के आक्रोश, विरोध, विद्रोह, उत्तेजना, तनाव और छटपटाहट को स्वर देती है। महिला लेखिकाओं ने समकालीन कविता में अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। खास बात यह है कि कवयित्रियाँ स्वयं से निकल देश-दुनिया के मुद्दों को अपनी कविता का विषय बनाती हैं। वे चूड़ी-बिन्दी से आगे जाकर अब ज्वलन्त विषयों पर बात करती हैं। साथ ही वे अपने आस-पास घटित होते घटनाक्रमों को भी देखती और याद रखती हैं। आज के मिलावटी युग की वेदना को महसूस करती हैं। गाँव से शहर कमाने आये, मजदूरी कर भूख मिटाने वाले, अपने छोटे-छोटे सपनों को साकार करने के लिए कठिन परिश्रम करने वालों को स्त्री कवयित्रियाँ अपनी कविता का विषय बनाती हैं। देश-दुनिया की खबरों से वे भी अनजान नहीं हैं। कवयित्री ज्योति चावला मेट्रो दुर्घटना में मारे गए मजदूरों को याद रखती है और कहती हैं-

वह जो मारा गया कल सुबह तड़के पाँच बजे
उसका नाम दयाराम वल्द मायाराम था
.....
आज गिर गई मिलावट की दीवार
और मारा गया दयाराम
इस गिरी हुई दीवार के नीचे दब गया
पिता का चश्मा और उनकी लाठी
कुछ ईंटें गिरी पत्नी की सूनी कलाई पर
कुछ ईंटें गिरी उसके बच्चों के पेट पर भी।

उन्हें अखबारों में छपी खबरें विचलित करती हैं। पुल के गिरने पर मारा गया दयाराम उनके जेहन से जाता नहीं। अखबारों में आए दिन खबरें छपती हैं, सेक्स रैकेट पकड़े जाने की। पर इन खबरों को पढ़ने पर लगता है, कितनी मजबूरी होती होगी, कैसे-कैसे अपने मन को मार कर अपने तन का सौदा किया होगा। क्या आसान होता है किसी के भी लिए अपने को उसे सौंपना जिसे न चाहते हो, न प्रेम हो। जब-जब अखबार में 'सेक्स रैकेट' में पकड़ी गई लड़कियों कि खबरें पढ़ती हूँ जाने मन भीतर से कैसा-कैसा हो जाता है। सोचने लगता है दिमाग कि क्या यह काम ये लड़कियाँ खुशी से करती हैं? ये काम करने में इनका दिल कितना टूटता होगा?

रंजना जायसवाल की कविता पढ़ते हुए अखबार और टेलीविजन पर पढ़ी-देखी गयी सारी खबरें, एक बार फिर मेरे मानस में उभर गयी-

आज फिर पकड़ी गयी हैं
सेक्स रैकेट की लड़कियाँ
फोटो छपा है अखबार में।

लड़कियों ने तो शर्म से या पहचान छुपाने के लिए मुँह कपड़े से ढक लिया है, पर असल में शर्म जिन्हें आनी चाहिए वे ऐसे खड़े हैं जैसे कोई बहुत बड़ा काम किया हो।

फोटो में उनके साथ चमक रहे हैं कुछ चेहरे

जिनके पुरुषार्थ से पकड़ी गयी हैं लड़कियाँ
वे ताक रहे हैं माननीय राष्ट्रपति को ओर
किसी पदक की उम्मीद में।

कवयित्री ने कितना पैना व्यंग्य किया है यहाँ। शर्म जिनको आनी चाहिए, मुँह जिन्हें छुपाना चाहिए वे सीना चौड़ा कर तन कर खड़े हैं। सेक्स रैकेट की लड़कियाँ उम्र में कम हैं, लेकिन जो ऊर्जा है, शक्ति है उसे गलत कामों में लगा देती हैं। इस काम में आना इनकी मजबूरी ही है, क्योंकि नहीं है इनके पास रहने-खाने को-

इनमें से कुछ के नहीं हैं घर
कुछ छोड़कर आयी हैं घर
कुछ से चलता है घर
कुछ खुद में ही है एक घर।

इन लड़कियों को सेक्स रैकेट तक पहुँचाने वाले उनसे ये काम करवाने वाले अधिकांश पुरुष हैं और तो और कवयित्री कहती है सवाल पूछने वाले भी मेरे पुरुष मित्र हैं-

इन लड़कियों को देखकर
चिढ़ाते हैं मुझे मेरे पुरुष मित्र
"मैडम, क्या यही है स्त्री की आजादी?

यह ताना देने वाले भूल जाते हैं कि 'मांग होने पर ही आपूर्ति होती है'। रंजना जी ऐसे विषयों को अपनी कविता में स्थान देती हैं जो सुनते-पढ़ते हुए भी हमारी लेखनी से छूट जाते हैं।

आज भी रंजना जी की लेखनी उन विषयों पर भी चलती है जिन्हें स्त्रियों के लिए वर्जित माना जाता है। स्त्री के लिए सजना, सँवरना, घर के काम-काज ज्यादा हुआ तो लीक पर चल कर बंधी-बंधाई नौकरी करना स्वीकार्य है। समाज के पंचों द्वारा जो मार्ग निर्धारित किया गया है उसके थोड़े भी इधर-उधर हो जाने पर तुरन्त स्त्री को छिनाल, कुलटा, जाने-जाने क्या पदवी मिलने लगती है-

'आवारा लगती है, चाल देखी।
स्त्री के नाम पर दाग है दाग
और दो इन्हें आजादी
अब न घर-परिवार बचेगा
न समाज-संस्कार
प्रलय करीब है।

'शराबखाने में स्त्री' को देखकर ही पुरुषों की त्यौरियाँ चढ़ जाती है। उनको लगता है यह अधिकार या सुख या संस्कार सिर्फ और सिर्फ उनका है। समाज को सुसंस्कारित करने का दायित्व स्त्रियों का है। अगर शराबखाने में स्त्री आने लगेगी तो 'प्रलय करीब है।' पुरुषों के मन की टीस कि सब जगह स्त्री आने लगी है। अब शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा छूटा होगा जहाँ स्त्रियाँ न पहुँची हो। अपने एकाधिकार को छूटते देख पुरुष कहीं न कहीं विचलित दिखाई देता है, इसलिए वे अपने-आप से ही पूछते हैं-

किसी भी क्षेत्र को
सिर्फ पुरुषों के लिए
नहीं छोड़ेगी क्या?

स्त्री लेखिकाओं के विषय अब सीमित नहीं रहे। समकालीन समय में उनके नजरिये में बहुत

विस्तार आया है। आत्मनिर्भरता और आत्ममंथन ने स्त्रियों को अपने बारे में सोचने का भी अवसर दिया है। जीवनस्तर में सुधार या बहुत पढ़ने-लिखने और नौकरी लगने में देरी ने थोड़ा जवान रखा है हमें। अब चालीस नहीं पचास में आते-आते होता है-

थोड़े बड़े या परिपक्व होने का अहसास
झुर्रियों के रेगिस्तान में
मुँह बाए खड़ा है ऊँट
छुपाए पेट के भीतर
बचपन की स्मृतियों का पानी।

पहले पुराने लोग कहते थे अब चालीस की उम्र हुई, बहुत हुई भाग-दौड़, अब थोड़ा आराम और कमाए हुए का आनंद लेंगे। लेकिन क्या वाकई आराम ले सकते हैं, उम्र के रोग लेने देते हैं आराम-

चैनलों के पहाड़ के नीचे
पहाड़ में है डायबिटीज, पायोरिया, ब्लडप्रेशर
से बचने के उपाय
है एक ऐसा गुणकारी जादुई तेल
बचाए जो बालों को असमय झड़ने-पकने से।

सविता भार्गव ने समय की नब्ज को पकड़ा। साथ ही वे अपने बचपन को याद करती हैं। बचपन में भी अपनी गुड़िया-चुन्नी, घर-घर खेलना उन्हें याद नहीं आता बल्कि याद आती है वह 'महरी' जिसे छूने को माँ हमेशा मना करती थी। मुझे भी याद है जब बहुत छोटी थी तब घर के बाहर की पोल का झाड़ू लगाती महरी सफाई कर गर्मी में बेहाल हुई वह पानी पिलाने को कहती थी तो नानी मुझे हिदायत देती ऊपर से पिला देना।

'स्पर्श-दो' कविता पढ़ी तो आज वह चित्र फिर मेरे मानस में उभर गया। छूना भी जिसे अपराध की श्रेणी में रखा गया। सविता भार्गव ने अपनी कविता से हमारा ध्यान उस परंपरा की ओर दिलाया है-

रोज-रोज रोटी को दूर से
उसके फैले आँचल पर फेंकते हुए
जाने कब एक जिद ने जन्म लिया मेरे भीतर
कि एक दिन छूकर देखूँगी उसे।

समकालीन युगीन परिस्थितियों में नारी के जीवन में सबसे अधिक परिवर्तन आया है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर जीवन की चुनौतियों को स्वीकारती है। आज की स्त्री अपने जीवन के भोगे गए यथार्थ के कटु धरातल पर खड़ी होकर अपने जीवन को सही मोड़ देने का प्रयास करती है। वह अब पढ़-लिख कर आत्मनिर्भर होना चाहती है। कविता 'बड्डीबाई' में स्त्री शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को चित्रित किया है-

अब भूलना नहीं
इसी तरह घोटती रही रूपी
और दिखाती रही माँ को
देख ये 'कां' है
और ये 'च'।

शिक्षा के अभाव ने ही हमें गुलाम बनाया। इससे मुक्ति का एकमात्र साधन है शिक्षित होना।

शिक्षित और आत्मनिर्भर हो कर ही हम मुक्त हो सकते हैं। वरना सुसज्जित पिंजरे तो हमारे लिए सदैव ही तैयार हैं।

रजंना जी ने अपनी कविता के विषय नये तो लिए ही हैं उनमें व्यंग्य भी इतना पैना है कि पढ़ने वाला उसकी धार भीतर तक महसूस करता है। पढ़ने में साधारण-सी लगने वाली कविता धीरे-धीरे 'बिहारी के घाव करे गंभीर-सी' हो जाती है। तोता-मैना की बात करते-करते वे सीधे पितृसत्ता की मानसिकता को बड़े धीरे से उघाड़ देती है-

एक रात
मैना पिंजरे का दरवाजा खोल
तोते के पास आयी
बोली-तुम भी बाहर आओ
फिर उड़ चलेंगे
सपने को साकार करेंगे
तोता बोला-'तुम आ जाओ ना
मेरे पिंजरे में।'

तोता मैना को अपने पिंजरे की सुविधाएँ गिना-बता रहा है। वह पिंजरे में ही रहना चाह रहा और मैना को सोने-चाँदी और सुख-सुविधाओं का वास्ता दे कर अपने पिंजरे में कैद करना चाह रहा। सदियों से कैद में रही मैना अब स्व-विवेक से यह जान चुकी है कि कैद तो कैद है। पिंजरा सोने का हो या लोहे का, है तो पिंजरा, मुक्ति में जो आनन्द है वह कैद में कैसे हो सकता है, पर सदैव ही लालच देकर, सुख-सुविधाओं का हवाला देकर मैनाओं को कैद किया है, जब कैद न हुई तो उन्हें आक्रोश का सामना करना पड़ा। तोता हमेशा से चाहता है-

बोला-'मेरा तो यही सपना था
कि तुम अपना पिंजरा छोड़कर
मेरे पिंजरे में आओगी।'
मैना क्रुद्ध हुई-
मैंने तेरे पिंजरे में
कैद होने के लिए
नहीं छोड़ा था अपना पिंजरा।

गहन स्त्री-विमर्श का कथन है इस कविता में। अब मैनाएँ बंद होने के लिए नहीं बल्कि मुक्त आकाश में उड़ने में के लिए छोड़ती हैं पिंजरे।

नमक की कीमत को कौन नहीं जानता। सबकुछ होते हुए भी अगर नमक नहीं तो स्वाद नहीं आ सकता न खाने में ना जीवन में। पद्मा जी 'नमक' को नये अर्थ में व्यक्त करती हैं-

जिनके पास खाने को रोटी नहीं
रोटी है तो साग नहीं
साग है तो नमक नहीं
जिनके पास खाने को नमक नहीं
उनके पसीने और आंसुओं में
फिर यह नमक कहाँ से आता है?

सच है पसीने और आँसू में नमक घुले होते हैं। मेहनत और दुःख दोनों का प्रतीकात्मक रूप नमक है। अनामिका भी 'नमक' को अपने अंदाज में छिड़कती हैं। उनके अनुसार 'नमक' दुःख है धरती का और उसका स्वाद भी। नमक के विभिन्न प्रयोगों को उन्होंने कविता में कहा। नमक चेहरे पर हो तो औरतों को कीमत चुकानी पड़ती है, जबकि सरकारी दफ्तरों में नमक जख्मों पर लगाने के काम में आता है-

सरकारी दफ्तर
शाही नमकदान हैं
बड़ी नफासत से छिड़क देते हैं हरदम
हमारे जले पर नमक।

कवि मन किस बात से प्रभावित हो जाए, कब कौनसी घटना उसे भीतर तक उद्वेलित कर दे कोई नहीं जानता। बहुत बड़े-बड़े मुद्दों पर बहस करते-लिखते कभी-कभी बहुत छोटी घटना भी उनके मानस को झकझोर देती है। पद्मजा जी बड़े मुद्दों के साथ वहाँ भी देखती हैं जहाँ कोई हाथ किसी लाचार की मदद के लिए उठ जाए-

मुझे वो हाथ पसंद है
जो किसी गरीब की मदद में उठे
वो हाथ मजबूत हो कि कमजोर
इससे क्या फर्क पड़ता है।

स्त्रियों की प्राथमिकता घर, परिवार, बच्चे हैं, पर फिर भी वे समाज और देश-दुनिया से बेखबर हों ऐसा बिल्कुल नहीं है। राजनीतिक बहसों, ज्वलंत मुद्दों पर भी उनकी दृष्टि बराबर रहती है। सविता सिंह ने देश-विभाजन की त्रासदी को अपनी कई कविताओं में चित्रित किया है। वे वहाँ भी सिर्फ स्त्रियों और लड़कियों को ही रेखांकित नहीं करती बल्कि पुरुषों के साथ हुए हादसों पर भी लिखती हैं। विभाजन ने रिश्तों को कैसे तार-तार किया उनकी 'मुश्ताक मियाँ की दौड़' कविता में देखा जा सकता है। ढाबा चलाने वाले मुश्ताक मियाँ ने लाखों को खिलाया गोश्त रोटी, तरकारी, दाल और सलाद। सभी उन्हें जानते हैं। लेकिन फिर भी साठ की उम्र में दिल की बीमारी के साथ सबकुछ छोड़ भागना पड़ा। पर कितना भाग पाते सो गिरे-

सो गिर पड़े मुश्ताक मियाँ
फिर सोचा जिन्हें इतनी प्यास है उनके खून की
वे आवें बीच सड़क पर कर लें दो हिस्से
उनके जिस्म के
लेकिन दंगाइयों की तो कुछ और ही मंशा थी
अब जिस्म को लहूलुहान करना काटना बीच से
नाकाफी था
अब तो उसे जलाकर खाक भी कर देना था
.....
मुश्ताक मियाँ खाक हुए
इंसानियत भी राख हुई।

इंसानियत आज बची कहाँ है। समय के साथ-साथ मानवीय-मूल्य घटते रहे और क्रूरताएँ बढ़ती गयी। इस क्रूरतम समय में भाषा और विचार लाग-लपेट कर कहे जाएँ, कैसे संभव है। अतः अब विचार

भी बिना किसी लाग-लपेट कर कहे जाएँ यही बेहतर है, फिर चाहे वे अच्छे लगे, ना लगे। निर्मला पुतुल भी साफ कहती हैं-

चिकनी-चुपड़ी भाषा की उम्मीद न करो मुझसे
जीवन के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलते
मेरी भाषा भी रूकड़ी हो गयी है
.....
लड़ते अपने हिस्से की लड़ाई
जो कुछ देखा सुना भोगा
बोला-बतियाया
लिख दिया सीधा-सीधा समय की स्लेट पर
टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में जैसे-तैसे।

अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-मन के संशय, दुःख, पीड़ा और प्रेम के अतिरिक्त समय और समाज की खुरदरी सच्चाइयाँ, दर्द से आक्रोश और प्रतिकार भी है। कविता में पास-पड़ोस के नाते-रिश्तेदार हैं, गाँव-कस्बा है, रीति-रिवाज हैं, इन सबके बीच जीवन के घात-प्रतिघात हैं, आकांक्षाएँ और यातनाएँ हैं। इनमें समय की विडम्बना और विद्रूपताएँ हैं, समय को साफगोई से प्रस्तुत करने का प्रयास भी है।

संदर्भ सूची-

1. ज्योति चावला : माँ का जवान चेहरा, दयाराम, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2013, पृ.सं. 12-13
2. रंजना जायसवाल : सिर्फ कागज पर नहीं, सेक्स रैकेट की लड़कियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ.सं. 19
3. वही, पृ.सं. 19
4. वही, पृ.सं. 21
5. वही, पृ.सं. 23
6. वही, शराबखाने में स्त्री, पृ.सं. 26
7. वही, पृ.सं. 27
8. सविता भार्गव : किसका है आसमान, चालीसवाँ जन्मदिन, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ.सं. 92
9. वही, पृ.सं. 92
10. वही, स्पर्श-दो, पृ.सं. 16
11. गगन गिल : एक दिन लौटेगी लड़की, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1989, पृ.सं. 25
12. रंजना जायसवाल : सिर्फ कागज पर नहीं, क्यों मैना गाली बकती है?,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2012,पृ.सं. 54
13. वही, पृ.सं. 55
14. पद्मजा शर्मा : हारूंगी तो नहीं, नमक, बोधि प्रकाशन, पृ.सं. 96
15. अनामिका : पचास कविताएँ, नमक, वाणी प्रकाशन,2012, पृ.सं. 7
16. पद्मजा शर्मा : हारूंगी तो नहीं, होना चाहिए, बोधि प्रकाशन, पृ.सं. 94
17. सविता सिंह : पचास कविताएँ, मुश्ताक मियाँ की दौड़, वाणी प्रकाशन, 2012, पृ.सं. 53
18. निर्मला पुतुल : नगाड़े की तरह बजते शब्द, जो कुछ देखा-सुना लिख दिया,भारतीय ज्ञानपीठ,2005, पृ.सं.94

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)-313001